Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः ईदुल-अज़्हियः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **23.12.16** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

# जमाअत की प्रगति तथा दुश्मन का विनाश दुआओं से होना है, इन्शाअल्लाह। इस लिए अपनी हालतों को अल्लाह तआला की शिक्षानुसार ढालते हुए अपने भीतर तक़्वा पैदा करते हुए अल्लाह तआला के आगे झुको।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अहमदिय्या जमाअत का विरोध तथा जमाअत के लोगों पर विरोधियों की ओर से किए जाने वाले अत्याचार कोई नई बात नहीं है और न ही नबियों की जमाअत का विरोध कोई नई बात है। सारे शैतान एकत्र होकर यह विरोध करते हैं। आलिम और लीडर, जनता के सामने विचित्र प्रकार की बातें, नबियों तथा उनके मानने वालों से सम्बंधित करके बयान करते हैं, उन्हें भड़काते हैं। द्वेष की आगें सुलगाने का प्रयास करते हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में यह बयान करके स्पष्ट कर दिया है कि प्रत्येक रसूल का विरोध होता है। कोई नबी नहीं जिसका विरोध न हुआ हो। नबियों का उपहास भी किया जाता है, शैतान उनके कामों में रोकें डालने का प्रयास भी करता है, तो यह कोई नई चीज़ नहीं जिसका अहमदिया जमाअत को सामना है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में इस बात का वर्णन करते हुए एक स्थान पर फ़रमाता है कि

وَكَذٰلِكَ جَعَلۡنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيۡنَ الۡاِنۡسِ وَالۡجِنِّ يُوۡحِيۡ بَعۡضُهُمۡ اِلٰى بَعۡضٍ زُخۡرُفَ الۡقَوۡلِ غُرُوۡرًا

अर्थात- और हमने इंसानों और जिनों में से सरकशों को इस प्रकार प्रत्येक नबी का दुश्मन बनाया था। उनमें से कुछ, कुछ अन्य की ओर चापलूसी की बातें धोखा देते हुए वह्ई करते हैं अर्थात धोखे देने की भावनाएँ दिलों में डालते हैं।

अल्लाह तआला की यह बात आज भी सच है। ये उद्दंड आलिम, दीन के नाम पर धोखे देते हैं तथा धोखे देते हुए जन साधारण को भड़काते हैं और कुछ लीडर भी उनके साथ मिले हुए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा आपकी जमाअत के सम्बंध में ऐसी बातें की जाती हैं जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं, वास्तविकता से कोई सम्बंध नहीं। इसी प्रकार दूसरी बातें भी ये लोग जो जमाअत के बारे में करते हैं अथवा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपहास करते हैं, ये सारी बातें अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में बयान फ़रमाई हैं कि नबियों के साथ यही कुछ होता है। झूठ भी उन पर बोला जाता है, उनका उपहास भी किया जाता है, मज़ाक भी उड़ाया जाता है। अतः एक ईमान पर क़ायम अहमदी के लिए यह विरोध तथा हमें कठिनाई में डालना, एक वास्तविक एंव सच्चे अहमदी के ईमान में व्यापकता का कारण बनता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि अब हम अहमदियों पर अत्याचार की चरम सीमा हो गई है तथा हमें अब कठोरता का जवाब कठोरता से देना चाहिए, कितने समय तक हम कठिनाईयाँ सहन करेंगे। चाहे एक दो या कुछ हों। कुछ ऐसे नौजवानों के मस्तिष्क को भ्रष्ट करने का प्रयास करते हैं, यह भी कहते हैं कि हमें अपनी मांगे पूरी कराने के लिए तथा अपनी स्वतंत्रता के लिए सांसारिक मार्ग अपनाने चाहिएँ। ये मूर्खता की बातें हैं तथा अत्यंत अनुचित विचार हैं। या तो ऐसे लोग भावनाओं में बह कर यह भूल गए हैं कि हमारी शिक्षा क्या है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे क्या चाहते हैं, अपनी जमाअत को इन कठिनाईयों तथा विरोध को सहने के लिए क्या उपदेश दिए हैं आपने, या फिर सहानुभूति जताकर ऐसे लोग जमाअत में फूट डालना चाहते हैं। ज्यूँ ज्यूँ जमाअत बढ़ती है, विरोधी भिन्न भिन्न साधनों के द्वारा आक्रमण करते हैं, विभिन्न रणनीतियाँ लाई जाती हैं, हो सकता है यह भी एक रणनीति हो। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से विजय, सहायता एवं प्रगति के वादे किए हैं परन्तु क्रोध का उत्तर क्रोध के साथ

नहीं बल्कि प्यार और मुहब्बत तथा दुआओं की ओर ध्यान देने से, और यही बात आप अलैहिस्सलाम ने हमें बार बार समझाई है कि जमाअत की प्रगति तथा दुश्मन का विनाश दुआओं से ही होना है, इन्शाअल्लाह। इस लिए अपनी हालतों को अल्लाह तआला की शिक्षानुसार ढालते हुए अपने अन्दर तक़्वा पैदा करते हुए अल्लाह तआला के आगे झुको। मसीह मौऊद ने तो अमन का शहज़ादा बनकर आना था और आया। आपने तो अपने मानने वालों को पहले दिन से ही कह दिया था कि मेरे रास्ते सरल रास्ते नहीं हैं, इनमें बड़ी कठिनाईयाँ हैं। यहाँ भावनाओं को भी मारना होगा तथा जान एवं माल की हानि को भी सहन करना होगा। अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत के लोग इस मार्ग में हर प्रकार की क़ुर्बानियाँ करते चले जा रहे हैं और जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बों में वर्णन भी किया था कि मुझे लिखते हैं कि दुश्मन के आक्रमण से हम डरते नहीं, हमारे ईमान पहले से बढ़कर मज़बूत हो रहे हैं परन्तु यदि कोई एक आध व्यक्ति भी ऐसी बात करे जो जमाअत की शिक्षा के विरुद्ध है तो फूट डालने वाली बात है तथा दुश्मन को हमारे विरुद्ध और अधिक अवसर देना है। विशेष रूप से जब ऐसी बातें वाट्सएप पर या ट्यूटर पर या फेस बुक पर अथवा किसी अन्य माध्यम से जाएँ। अतः हम तो उस शिक्षानुसार कार्य करते आए हैं कि विरोधियों के अत्याचार एवं विध्वंस के मुक़ाबले पर हमने ज़ुल्म एवं विनाश नहीं दिखाना। वैसी अभिव्यक्ति हमें नहीं करनी तथा न ही शासकों से हमने हथ्यारों के साथ मुक़ाबला करना है। हमारा मुक़ाबला दुआओं के हथ्यार से है, जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें यह शिक्षा दी है कि यदि ख़ुदा तआला की सहायता तथा उसके प्यार को प्राप्त करना है तो दुश्मन के हमलों तथा उसके अत्याचारों का जवाब इस प्रकार नहीं देना बल्कि धैर्य और दुआ से काम लेना है तभी हम सफलताओं को देखेंगे। अतः एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे दोस्तो! जो मेरी बैअत के सिलसिले में दाख़िल हो, ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की तौफ़ीक़ दे जिनसे वह प्रसन्न हो जाए। आज तुम थोड़े हो तथा घृणा की दृष्टि से देखे गए हो और परीक्षा की घड़ी तुम पर है। अल्लाह की उसी सुन्नत के अनुसार कि जब से दीन जारी है। प्रत्येक दिशा से प्रयास होगा कि तुम ठोकर खाओ और तुम प्रत्येक दिशा से सताए जाओगे और भिन्न भिन्न प्रकार की बातें तुम्हें सुननी पड़ेंगी और हर एक जो तुम्हें ज़बान या हाथ से कष्ट देगा, वह समझेगा कि वह इस्लाम का समर्थन कर रहा है और कुछ आसमानी परीक्षाएँ भी तुम पर आएँगी ताकि तुम्हारी हर प्रकार से परख हो, सो तुम सुन रखो कि तुम्हारी विजय और ग़ल्बः का मार्ग यह नहीं कि तुम अपनी शुष्क युक्ति से काम लो अथवा उपहास के मुक़ाबले पर उपहास करो या गाली के जवाब में गाली दो क्यूँकि यदि तुमने ये रास्ते अपनाए तो तुम्हारे दिल कठोर हो जाएँगे तथा तुममें केवल बातें ही बातें होंगी जिनसे ख़ुदा तआला नफ़रत करता है और घृणा की दृष्टि से देखता है, सो तुम ऐसा न करो कि अपने ऊपर दो धिक्कारें एकत्र कर लो, एक सृष्टि की, दूसरी ख़ुदा की भी।

अतः हमने तो उस शिक्षानुसार कर्म करने हैं तथा उस निर्देशानुसार चलना है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें दी है। हमने गालियों का जवाब न गाली से देना है, न फ़साद का जवाब फ़साद पैदा करके देना है और क़ानून को अपने हाथों में लेकर देना है और फिर पाकिस्तान तथा अन्य मुस्लिम देशों में तो यदि उचित रूप से भी अपना बचाव करें तो अधिकांशतः यही देखा गया है कि क़ानून हमारा साथ देने के बजाए ज़ालिम का साथ देता है। निर्दोष अहमदी क़ैदियों की ज़मानत भी इस कारण से नहीं ली जाती कि अदालतें मौलवियों के सामने बेबस हैं। अदालत के बाहर खड़ा मौलवी अदालत को पैग़ाम भेज देता है कि यदि ज़मानत दी तो फिर तुम अपना हाल देख लेना और अधिकांश जज भय के कारण अगली तारीख़ दे देते हैं और फ़ैसला नहीं करते। अतः न क़ानून लागू करने वाले विभाग हमारा साथ देने को तय्यार हैं, न ही न्याय करने को तय्यार है। देश में फ़साद करना हमारी शिक्षा नहीं है। अतः एक ही रास्ता है कि अल्लाह तआला की चौखट को पकड़ें तथा दुआओं को चरम सीमा तक पहुंचाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फ़रमाया कि यदि कोई गालियाँ दे तो हमारी शिकायत ख़ुदा के समक्ष है, न कि किसी अन्य न्यायालय में तथा इस कारण से मानव समाज से सहानुभूति हमारा हक़ है। गालियाँ सुनकर भी हमने सहानुभूति ही करनी है। अतः हममें से प्रत्येक को चाहिए कि वह सीधे कठिनाई के दौर से गुज़र रहा या नहीं गुज़र रहा, धैर्य के दामन को पकड़ना है और यही ईमान की निशानी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आपके साथ चलना कोई सरल बात नहीं है।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि एक मोमिन के तक़्वा का स्तर बहुत ऊँचा होता है और दुश्मन की ओर से कष्टों के बावजूद वे हर प्रकार के उपद्रव का मुक़ाबला करते हैं और चिंता नहीं करते दुश्मनों की कठिनाईयों की। दूसरों की ओर से

दुःखों के बावजूद वे उनकी ग़लतियाँ क्षमा करने के लिए तय्यार होते हैं, फ़साद नहीं फैलाते बल्कि शांति के दूत ही बने रहते हैं, आप फ़रमाते हैं कि निःसन्देह याद रखो कि मोमिन मुत्तक़ी के दिल में फ़साद नहीं होता, मोमिन जितना मुत्तक़ी होता जाता है उतना ही किसी के विषय में दंड एंव कठिनाई को पसन्द नहीं करता। तक़्वा बढ़ता है तो सहानुभूति बढ़ती चली जाती है। शत्रु के लिए भी दंड एवं कष्ट को पसन्द नहीं करता। फ़रमाया कि मुसलमान कभी द्वेष रखने वाला नहीं हो सकता, वास्तविक मुसलमान जो है वह द्वेष रखने वाला नहीं हो सकता। हाँ, दूसरी क़ौमें ऐसी द्वेष रखने वाली होती हैं कि उनके दिल से दूसरे के प्रति द्वेष कभी नहीं जाता तथा बदला लेने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं परन्तु हम देखते हैं कि हमारे विरोधियों ने हमारे साथ क्या किया है। कोई दुःख और कष्ट जो वे दे सकते थे, उन्होंने दिया परन्तु हम फिर भी उनके हज़ारों दोष क्षमा करने को तय्यार हैं। अतः तुम जो मेरे साथ सम्बंध रखते हो, याद रखो कि तुम प्रत्येक व्यक्ति से, चाहे वह किसी धर्म का हो, सहानुभूति करो तथा धर्म और जाति के भेदभाव के बिना प्रत्येक क़ौम के साथ नेकी करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यदि हमारी बातों में दूसरों की भांति बुद्धि से हटकर केवल जोश है तो यह तक़्वा नहीं है। हमारे कर्म यदि इस्लाम की शिक्षानुसार नहीं तो यह तक़्वा नहीं है। हमारी कथनी करनी में यदि अल्लाह तआला के नूर का प्रतिबिम्ब नहीं तो हमें अपने तक़्वा की चिंता करनी चाहिए। कठिन प्रस्थितियों में यदि हम ज़माने के इमाम की बताई हुई नसीहतों एंव निर्देशों के अनुसार कार्य नहीं कर रहे तो हम उस नूर से दूर चले जाएँगे जो अल्लाह तआला की ओर से उस आज्ञापालन के कारण हमें मिलना है। अतः पहले हमें आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है। यदि हमारे तक़्वा के स्तर इतने बुलन्द हो चुके हैं कि जहाँ हमें अल्लाह तआला का नूर नज़र आए तथा जहाँ हमारी दुआएँ करुणा की उन सीमाओं को छू रही हैं जो एक सम्पूर्ण दुआ करने वाले के लिए चाहिए जो अल्लाह तआला चाहता है तो फिर हमें इस बात पर विश्वास रहना चाहिए कि अल्लाह तआला की सहायता और सहयोग निकट है और अल्लाह तआला ही हमारे लिए देश भी बनाएगा तथा हमारे लिए सरलताएँ भी उत्पन्न करेगा, इन्शाअल्लाह। और यदि इससे हटकर हम प्राप्त करना चाहते हैं अथवा चाहेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। हमारे सामने उन संगठनों के उदाहरण हैं जो इस्लाम के नाम पर तथा असंख्य साधनों सहित, मिलयन्ज़, बिलयन्ज़ डालर और पाउंड ख़र्च करके, सरकारें इस्लामी शासन स्थापित करना चाहती हैं परन्तु उपद्रव, अत्याचार एवं विनाश के अतिरिक्त उन्हें कुछ नहीं मिला। अस्थाई कब्ज़े भी हुए तो भी हाथ से निकल गए। इस्लाम को बदनाम करने वाले तो ये कहलाते हैं, दुनया में इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। इस्लाम की सेवा करने वाले इनको कोई नहीं कहता। इस्लाम की सेवा तथा इस्लाम का प्रसार अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा और आपकी जमाअत के द्वारा ही भाग्य में लिखा है तथा यह उसी अवस्था में सम्भव है जब हम अल्लाह तआला के भेजे हुए इस दूत के पद्चिन्हों पर चलें अन्यथा दुनया की दृष्टि से हम जितना चाहे प्रयास कर लें, न हमारे पास शक्ति है न साधन हैं कि हमें कुछ प्राप्त हो सके परन्तु यदि हम तक़्वा पैदा कर लेंगे, यदि हम अपने दिलों में अल्लाह तआला का भय पैदा कर लेंगे, यदि हम अपनी दुआओं को चरम सीमा तक पहुंचाने वाले होंगे तो जैसा कि हज़रत मसीह माऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुआन-ए-करीम के हवाले से फ़रमाया है कि हमें वे नूर तथा शक्तियाँ प्रदान होंगी जिनका कोई बड़ी से बड़ी शक्ति भी मुक़ाबला नहीं कर सकती और अल्लाह तआला का यह फ़रमान भी है कि ان اکرمکم عند اللہ اتقکم अर्थात अल्लाह तआला की दृष्टि में तुममें सर्वाधिक प्रतिष्ठित वही है जो सबसे बढ़कर मुत्तक़ी है, तो क्या अल्लाह तआला ग़लत कहता है? एक ओर तो वह मुत्तक़ी को आदरणीय कहे और दूसरी ओर दुनया वालों के सामने उन्हें अपमानित करके छोड़ दे, निःसन्देह नहीं, यह ठीक है कि नबी तथा उनकी जमाअतों को दुनयादारों के विरोध का सामना करना पड़ता है जिस प्रकार कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्वयं बयान फ़रमाया है परन्तु क्या प्रत्येक अवसर पर दुश्मन स्वयं असफल एवं विफल नहीं हुआ। क्या प्रत्येक जो जमाअत की प्रगति में रोक डालने के लिए खड़ा हुआ अथवा प्रत्येक रोक जो जमाअत की प्रगति में डाली गई, उससे जमाअत फैली और फूली नहीं? भीतरी षडयन्त्र भी विरोधियों ने किए, बाहरी आक्रमण भी परन्तु जमाअत उन्नति के मार्ग पर क़दम मारते हुए आज दो सौ नौ देशों में स्थापित हो चुकी है। यदि एक स्थान से दबाते हैं तो दूसरे स्थान पर पहले से बढ़कर फैलने का अल्लाह तआला सामान और अवसर प्रदान कर देता है। अल्लाह तआला तो कहता है कि मैं एक साधारण व्यक्ति को, जो तक़्वा में बढ़ा हुआ है बिना सम्मान देने के नहीं छोड़ता, तो क्या जिस व्यक्ति को स्वयं ख़ुदा तआला ने भेजा है तथा पिछले सवा सौ साल से हम जिसके साथ अल्लाह तआला के समर्थन देख रहे हैं। आज अल्लाह तआला उसकी जमाअत को शेष वादे पूरे किए बिना छोड़ देगा? बिना

सम्मान के छोड़ देगा? यह कभी नहीं हो सकता। परन्तु जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यह सब कुछ क़दमों को जमाने और निरन्तर प्रयासों से मिलेगा, यह शर्त है। यदि हम निरन्तर प्रयासों के द्वारा अल्लाह तआला का दामन पकड़े रहेंगे तो दुश्मन की राख उड़ते भी हम इन्शाअल्लाह देखेंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि-

यदि तुम्हारा जीवन और तुम्हारी मौत तथा तुम्हारी प्रत्येक हरकत और तुम्हारी नर्मी और गर्मी अर्थात प्रसन्नचित भी तथा क्रोध भी केवल ख़ुदा तआला के लिए हो जाए, व्यक्तिगत उद्देश्य के लिए किसी पर क्रोधित न हो, न किसी सांसारिक वस्तु को देखकर ख़ुश हो जाओ, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए हो ये बातें तो फिर, फ़रमाया- और प्रत्येक कटुता एवं कठिनाई के समय तुम ख़ुदा की परीक्षा नहीं लोगे तथा सम्बंध को नहीं तोड़ोगे बल्कि आगे क़दम बढ़ाओगे तो मैं सच सच कहता हूँ कि तुम ख़ुदा की एक विशेष क़ौम हो जाओगे। तुम भी मनुष्य हो जैसा कि मैं मनुष्य हूँ तथा वही मेरा ख़ुदा, तुम्हारा ख़ुदा है। अतः अपनी पवित्र शक्तियों को नष्ट न करो, यदि तुम सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा की ओर झुकोगे तो देखो मैं ख़ुदा की इच्छानुसार तुम्हें कहता हूँ कि तुम ख़ुदा की एक आदरणीय क़ौम हो जाओगे। ख़ुदा की महानता लोगों के दिलों में बिठाओ तथा उसकी तौहीद का इक़रार न केवल ज़बान से बल्कि कर्म के द्वारा करो ताकि ख़ुदा भी क्रियान्वित रंग में अपना उपकार तुम पर प्रकट करे।

अतः हममें से प्रत्येक को अपनी हालतों में बदलाव पैदा करने की आवश्यकता है। जो कमज़ोर हैं वे अपना निरीक्षण करें, जो अपने आपको अच्छा समझते हैं वे भी नेकियों में बढ़ने के और अधिक मार्ग खोजें क्यूँकि केवल अल्लाह तआला ही जानता है कि अच्छा कौन है तथा कहाँ तक हमने, जो हमारे लक्ष्य हैं, हमने प्राप्त किए हैं। अल्लाह तआला हमें एक स्थान पर ठहरा हुआ नहीं देखना चाहता। यह धारणा किसी की नहीं होनी चाहिए कि अब मैं अच्छा हो गया हूँ और नेकियों में बढ़ रहा हूँ अथवा नेकियों को प्राप्त कर लिया है। हमें अपने स्तरों को ऊँचा करने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि-

ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को सूचित करूँ कि जो लोग ईमान लाए, ऐसा ईमान जो उसके साथ दुनया की मिलोनी नहीं तथा वह ईमान, पाखंड अथवा कायरता में लिप्त नहीं तथा वह ईमान, आज्ञापालन के किसी स्तर से भी वंचित नहीं, ऐसे लोग ख़ुदा के चहीते लोग हैं और ख़ुदा फ़रमाता है कि वे वही हैं जिनका क़दम सच्चाई का क़दम है।

अतः इस सच्चाई के पथ पर हमें चलने की आवश्यकता है ताकि उन सफलताओं के नज़ारे हम कर सकें जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सम्बंधित हैं, जो अल्लाह तआला ने आपके भाग्य में लिखी हुई हैं। यह परीक्षाओं का दौर निःसन्देह समाप्त होने वाला दौर है परन्तु इसमें तेज़ी पैदा करने के लिए हमें अपने तक़वा के स्तरों को बढ़ाने तथा बढ़ाते चले जाने की आवश्यकता है। निःसन्देह अल्लाह तआला ने इस ज़माने में यह जमाअत इस लिए स्थापित फ़रमाई है कि दुनया में इस्लाम का बोल बाला हो और इस्लाम, दुनया में फैले हुए सब दीनों पर इस्लाम को ग़ल्बः प्राप्त हो। अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से यह वादा फ़रमाया है कि इस जमाअत ने बढ़ना है, फलना है, फूलना है और कोई दुनया की शक्ति इसे नष्ट नहीं कर सकती। आप फ़रमाते हैं- यह मत सोचो कि ख़ुदा तुम्हें असफल कर देगा, यह विचार मत करो कि ख़ुदा तुम्हें असफल कर देगा, तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो ज़मीन में बोया गया, ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा तथा हर ओर इसकी शाखें निकलेंगी और एक बड़ा वृक्ष हो जाएगा।

अल्लाह तआला करे कि हममें से प्रत्येक इस वृक्ष की फलने फूलने वाली शाखा बन जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी जमाअत से जो अपेक्षाएँ हैं उन पर हम पूरा उतरने वाले हों, तक़्वा में उन्नति करने वाले हों तथा धैर्य और दुआ के साथ दुश्मन के प्रत्येक आक्रमण को असफल एंव नाकाम करते चले जाने वाले हों।

हुज़ूर अनवर ने नमाज़ों के बाद मुकर्रमा मलक ख़ालिद जावेद साहब दुलमियाल ज़िला चकवाल की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई। इन्ना लिल्लहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।